द्वितीय अध्याय

''विवेच्य नाटकों में चित्रित कबीर का व्यक्तित्व''

द्वितीय अध्याय

'विवेच्य नाटकों में चित्रित कबीर का व्यक्तित्व'

2.1 प्रस्तावना -

मध्यकालीन संतो में कबीर का स्थान प्रमुख एवं महत्वपूर्ण माना जाता है। हिंदी साहित्य के इतिहासकार शिवकुमार शर्मा ने अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य युग और प्रवृतियाँ' मे कबीर के व्यक्तित्व के बारे में लिखा है कि,

"महात्मा कबीर परम सन्तोषी, उदार, स्वतंत्रचेता, नीर्भिक, सत्यवादी, अहिंसा, प्रेम के समर्थ, सात्विक प्रकृति, बाह्याडंबर विरोधी तथा अदम्य साहस एवं अखंड आत्मविश्वास, प्रखर प्रतिभा तथा विलक्षण अथक सशक्त व्यक्तित्व से संपन्न थे। वह अपनी सामाजिक व्यवस्था और धार्मिक तीव्रतापर आघात करते हैं।"[1] कबीर के बारे में डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं, "वे सिर से पैर तक मस्तमौला, स्वभाव से फक्कड, आदत से अक्खड़, भक्त के सामने निरीह, भेषधारी के आगे प्रचंड़, दिल के साफ, दिमाग के दुरूस्त, भीतर से कोमल, बाहेर से कठोर, जन्म से अस्पृष्य, कर्म से वन्दनीय थे। युगावतार की शक्ति और विश्वास लेकर वे पैदा हुए थे। और युग प्रवर्तक की दृढ़ता उनमे वर्तमान थी।"[2]

समसामयीक समाज पर कबीर ने अपने व्यक्तित्व का जो प्रभाव छोड़ा था। उससे समाज के साथ-साथ इतिहासकार भी प्रभावित रहे हैं। हर समय हर समाज में अन्याय, अत्याचार और शोषण का सीलसीला जारी रहता है उसे तोड़ने के लिए हर समय एक निर्भिक और साहसी कबीर की आवश्यकता महसूस होती है। समाज में जब इसकी कमी महसूस होती है तब सामाजिक अन्याय, अत्याचार और अनाचार से आहत साहित्यकार अपनी रचनाओं में कबीर को खड़ा करते हैं। मणि मधुकर, भिष्म साहनी

और नरेंद्र मोहन जी ने अपने नाटकों द्वारा कबीर के ऐसे व्यक्तित्व को इसलिए खडा किया ताकि नागरिकों द्वारा उसका अनुकरण हो जाए। और वर्तमान समाज की गंदगियों को कम करने में कुछ मात्रा में मदद हो जाए। अत: विवेच्य कृतियों में प्राप्त कबीर के व्यक्तित्व को देखना यहाँ क्रमप्राप्त बन जाता है। तथापि इसके पहले इतिहासकारों द्वारा कबीर का जो व्यक्तित्व उभारा है उसकी झाँकी देखना भी यहाँ आवश्यक है। कबीर स्वभाव से मस्तमौला तथा निश्चल थे। कबीर के कवित्तों से कबीर स्वभाव से अत्यंत कठोर लगते हैं उनका अंतर्मन अत्यंत कोमलता से भरापूरा था। हरक्षण रामनाम में मस्त रहनेवाले निरक्षर कबीर ने अपनी वाणी द्वारा तत्कालीन समाज में फैले हुए दूराचार, आडंबर तथा धार्मिक ढोंगों का पर्दाफाश किया है।

नाटककारों ने कबीर के व्यक्तित्व की विशेषताओं को सुचारु रूप से अपने नाट्यकृतियों में उभारा है। विवेच्य नाटकों के कबीर के व्यक्तित्व में निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं।

2.2 बेपरवाही –

कबीर एक संत कवि के रूप मे हमारे सामने अवतारित हुए हैं। संतों को न तो अपने परिवार की चिंता होती है न तो परिवार में उत्पन्न होनेवाली समस्याओं की। उनका काम होता है बस इश्वर की साधना करना और इश्वर भक्ति में लीन होना। उन्हें दुनियासे कोई लेना देता नहीं होता। पर कबीर इन सबसे हटके थे। वह गृहस्थ जीवन बीतानेवाले सन्त थे। उनका मानना था की ईश्वर की साधना करने के लिए घरबार छोड़कर वन में जाने की आवश्यकता नहीं हैं। "घर में रहकर ही सच्ची भगती हो सकती है। जोग, जप, तप–सब घर ही में सच्ची साधना हो सकती है।"[3] शादी करने के बाद भी अपनी घर गृहस्थी के प्रति वह लापरवाह थे। एक बार कबीर को बापू नूरा कपड़े का थान बेचने के लिए बाजार भेज देते हैं। तो थान बेचने

के बजाय कबीर वह थान किसी दूसरे आदमी के पास देकर वही पडितो से शास्त्रार्थ करते दिखाई देते हैं। उनके ध्यान में यह भी नही होता कि उन्होंने कपड़े का थान किस आदमी के हवाले किया है। इसपर उनके पिता नूरा झल्ला उठते हैं,

"नूरा : थान तो तू लेकर गया था।

कबीर : नहीं, बाजार में मैंने एक से कहा था कि ये थान घरपर पहुँचा दे, बापू को दे आये। मैने सोचा पहुँचा दिये होंगे।

नूरा : तू अच्छा ब्यौपार करते जाता है। थान किसी दूसरे के हवाले कर आया है कौन था वह?"[4]

कबीर की मुल्ला मौलवी तथा पंडितों से उलझने की आदस से छुटकारा पाने के लिए घरवाले कबीर का ब्याह लोई नामक कन्या से करवा देते हैं। लोई के पिता कबीर के सत्संग में अक्सर आते हैं। इसलिए वह लोई की शादी कबीर से करने के लिए राजी हो जाते हैं। परंतु शादी के बाद कबीर और ज्यादा बेपरवाह हो जाते हैं। पर ईश्वर की साधना में रमे कबीर को अपनी पत्नी लोई तथा अपने बच्चों की कोई परवाह नहीं होती। इसलिए लोई तंग आकर उन्हे जलीकटी सुनाती रहती है। पिता नूरा, माता नीमा तथा पत्नी लोई आदि कबीर के परिवार के सारे गृहस्थ परिवार के पालनपोषण की जिम्मेदारी से त्रस्त हैं फिर भी कबीर को परिवार के बजाय दुनिया की चिंता लगी रहती है।

"नीमा : मैं सोच से मरी जा रही हूँ क्या होगा इस घर का? ये बच्चे कैसे जियेंगे? यह परिवार .....

कबीर : माँ मेरे लिए यह परिवार ही बढ़कर एक बड़े परिवार का हिस्सा बन गया है। तनने बुनने का लेकर मैं क्या करूँ कुछ समझ में नही आता।
को बीने प्रेत लागी री माई को बीने।
राम रसाइण माते री माई को बीने ।"[5]

कबीर की हररोज मुल्लाओं से, पंडितों से उलझने की आदत से तंग आयी हुई पत्नी लोई कबीर के हर रोज कवित्त सुनाने तथा लोंगो से उलझने की आदस से बौखला उठती है। हररोज घरपर नया संकट लानेवाले कवित्तों को छोड़ने की सलाह वह कबीर को देती है तभी कबीर कहते हैं उन कवित्तों में उनकी जान बसती है। कबीर की परिवार के प्रति बेपरवाह वृत्ती से तंग आकर लोई कहती है, ''तुम्हें कवित्तों की पड़ी है। बताओ इन बच्चों का क्या करूँ? (पास खड़े कमाल और गोद में कमाली की ओर इशारा करके) क्या दूँ इन्हें खाने को? इनका गला घोट दूँ क्या? धंदा करते खड्ड़ी में मन लगाते तुम्हारी जान निकलती है। बोलो, कहॉ से खिलाऊँ इन्हें?''[6]

लोई की इन बातों से बेपरवाह कबीर दुनिया की चिंताओं को सुलझाने के लिए निकल पड़ते हैं। इस प्रकार खुद के घर की समस्याओं से बेपरवाह कबीर संसार को समस्याओं से मुक्त करने के लिए आग्रही पाये जाते हैं।

2.३ दृढ़ता एवं उग्रता - .

पारिवारिक चिंताओं से बेपरवाह कबीर अपने मतों के प्रति दृढ़ एवं आग्रही है। अपने विचार से वह किसी भी स्थिति में मुँह नही मोडना चाहते। अपने मतों के प्रति आग्रही, दृढ़ रहने वाले, कबीर के स्वभाव का महत्वपूर्ण गुण है उग्रता। समाज में गरीबों पर होते अत्याचारों को देखकर उनका खुन खौल उठता है। इसलिए वह मुल्ला मौलवी, पंडितों आदि समाज कंटकों को अपने कवित्तों के जरीए फटकारते हैं। कबीर की बेपरवाही की वजह से परिवार की हालत अच्छी नहीं रहती थी। कबीर के दृढ़ विचारों की वजह से परिवार के सदस्यों को कभी कभी भूखेपेट रहना पडता था।

कबीर का बेटा कमाल जवान होनेपर समाज के बूरे घटकों की नजर उसपर आ टिकी। अपने स्वार्थ के विरोधी कबीर का गुस्सा समाज कंटक कमाल पर उतारने लगे।

कबीर के साथ साथ कमाल को भी पीटा जाने लगा। अपने अंधकारमय भविष्य तथा रोज रोज के मारपीट से तथा घर की की गरीबी से तंग आकर कमाल धर्म बेचकर पैसा कमाने लगता है। गरीबों के लिए लड़नेवाले शूरवीर कबीर का यह सिधांत था कि दिनों के हित के लिए लडो और पुरजा पुरजा कट मरो। धर्म हित संबंधित लोग कमाल पर साम, दाम, दण्ड, नीति का प्रयोग कर उसे खरीद लेते हैं। यह बात सत्य के प्रति दृढ कबीर को अखरती है। कबीर कमाल की इस बात का विरोध करने लगते हैं। वह दृढ़ता से कमाल को पटकारते हैं। 'हरि नाम' बेचकर धन कमाना सत्य के प्रति आग्रही कबीर को बरदाश्त नहीं होता।

'कबीर. वाह रे मेरे कमाऊ पूत । तुमने वंश का नाम खूब चमकाया .
नाम साहब का बेचकर, घर लाया धन–माल।
बूडा वंश कबीर का, जनमा पूत कमाल।''[7]

अपने विचार पर दृढ़ रहने वाले कबीर का कहना है कि वह अपने ही लोगों को अपनी आँखो के सामने गिरता हुआ नहीं देख सकते। कबीर का पूरा जीवन झुठे कर्मकांड, अंधश्रध्दाओं का विरोध करने में बीता। समाज में होनेवाले अन्याय, अत्याचार के विरूध्द वह डटकर संघर्ष करते रहे। समाज के स्वार्थी लोक तथा धर्म के ठेकेदारोंने उनके मनसुबे तोड़ने चाहे। लाख प्रयत्न करने के बावजूद भी वह कबीर की दृढता के सामने असफल रहे। कोतवाल के कहनेपर सिपाही द्वारा भिखारी नन्दू को मौत की सजा दी जाती है। समाज में दहशत फेलाने की वजह से उसकी लाश गली गली घुमाई जाती है। इसके पीछे कोतवाल की यह धारणा होती है कि कबीर सत्संग लगाना छोड़ दे तथा दहशत की वजह से समाज के लोग उसके सत्संग में शामिल न हो। तभी अपने मतपर दृढ़ कबीर कहते हैं, ''हम स्वंय मिलकर अपना समागम लगायेंगे। कोतवाल तो यही चाहता है कि हम चुप हो जायें, हमारी आवाज बन्द हो जाए। पण्डे मौलवी भी यही चाहते है। नहीं, रैदासजी, अब हम मिलकर अपने

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

कवित्त गायेंगे, गली बजार में गायेंगे, समागम करेंगे, सत्संग लगायेंगे।''[8]

इस प्रकार कबीर की अपने मतों के प्रति दृढ़ता एवं उग्रता देखने मिलती है। कबीर को उनके घरवाले, समाज के ठेकेदार तथा शासक वर्ग भी दृढ स्वभाव से परावृत्त नहीं कर पातें।

2.4 निर्मम अक्खड़ता -

अक्खड़ता कबीरदासजी का महत्वपूर्ण गुण है। संसार के दु:खो, करूणाशील, समस्याओं से पिड़ित लोगों को देखकर उनका मन कातर ही नहीं होता था बल्कि कठोर होकर अन्याय के खिलाफ लड़ने की चेतना देता था। साधु होने की वजह से कबीर ने अक्खडता विरासत में पाई हुई है।

अनपढ़ होकर भी कबीर पढे लिखे लोगों से भी ज्यादा ज्ञान हासिल कर चुके हैं। पंड़ित, मुल्ला मोलवियों से कबीर इसलिए उलझते हैं कि वे लोग वेद तथा कुराण में बतांये गए उपदेशों का विपरित अर्थ लगाते हैं। उसी के आधारपर लोगों से छल प्रपंच करते हैं। उन्हें कबीर फटकारते हैं। पंडित मुल्ला झूठे क़र्मकाडों को, अंधश्रध्दाओं को, ज्ञानहीन मान्यताओंको महत्व प्रदान करते हुए सच्चे ज्ञान के प्रति अज्ञानी थे। कबीर वेद—पुराण की बातों को उपयोग हीन सिद्ध करते हुए प्रेम का तथा भक्ति का पुरस्कार करते हैं।

> ''पोति पढ़ि पढि जग मुआ पंडित भया न कोय,
> ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।''[9]

इस प्रकार अपनी अक्खड़ वाणी के जरीए कबीर अपने आप को ज्ञानी तथा धर्म के मसीहा समझनेवाले अज्ञानी लोगों को फटकारते हैं। कबीर ब्राह्मण पंड़ित और

मुल्ला, मौलवियो पर भी कड़ा आक्रमण करते है। वे पंडित और मुल्ला को बिल्कुल हेय दृष्टि से देखते हैं। उन्हे उचित मान नहीं देते। कबीर उन्हें इस प्रकार सबोधित करते हैं कि वह बिल्कुल नगण्य, तुच्छ जीव हो। केवल बाह्याचार के पुतलें हो।

"पंड़ित होय के आसन मारे, लम्बी माला जपता है।
अन्तर तेरे कपट करतनी, सो भी साहब लखता है।"[10]

इस प्रकार अपने अक्खड़ तथा फक्कड स्वभाव की वजह से कबीर पंडित तथा मुल्ला मौलवियों के रोष के पात्र हो जाते है। सत्य के लिए आग्रही कबीर को अपने मत को स्पष्ट करने के लिए कभी कभी स्पष्ट बोलना पडता है। इसलिए वे अक्खड़ प्रतीत होते हैं।

2.5 नीड़र प्रवृत्ति -

नीड़र प्रवृत्ति कबीर के व्यक्तिव का महत्वपूर्ण गुंण है। 1. समाज में दिखाई देनेवाली विषमता के विरूध्द कबीर कड़ा संघर्ष करते हैं। 2. कबीर जाति–पाँति, छुआछुत, ऊँच-नीच का भेदभाव न मानकर समाज में अराजकता फैलानेवाले घटकों का डटकर विरोध करते हैं। 3. वह धर्म के ठेकेदारों पर करारा व्यंग्य करते हैं। 4. कबीर स्वयंको न हिंदू मानते हैं न मुसलमान वह खुद को गर्व से जुलाहा कहते हैं। 5 उन्हें अपनी जाति पर अभिमान है। 6 कबीर सवको एक ही खुदा के बन्दे मानते हैं। 7 छुआछुत माननेवाले हिंदूओं को भी वह फटकारते हैं तथा मुसलमानों को भी। मगर निडर प्रवृत्ति के कारण कबीर को समाजकंटकों के कोडों का शिकार होना पड़ता है। उन्हे समझाते कबीर कहते हैं–

"साधो, देखो जग बौराना,
सांची कहौ तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना।"[11]

कबीर को समाज में जहरीले साँप की तरह फैला हुआ वर्णभेद मान्य नहीं है। उनके मतानुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र यह सभी अलग अलग न होकर एक ही भगवान के द्वारा उत्पन्न हुए हैं। वह इस जातिगत भेद को मीटा देना चाहते है। वह पम्परा से चली आ रही वर्ण व्यवस्था का कड़ा विरोध करते हुए कहते हैं,

"हमारे कैसे लहु, तुम्हारे कैसे दूध।
तुम कैसे ब्राह्मण पांडे, हम कैसे सूद।"[12]

कबीर समाज में खुदको सर्वश्रेष्ठ समझने वाले ब्राह्मणों की खिल्ली उड़ाते हैं। वे कहते हैं अगर तुम्हें ब्राह्मण ने जन्म दिया है तो तुम किसी और रास्ते से पैदा क्यों नही हुए तुम्हारा जन्म भी उसी मार्ग से हुआ है जिस मार्ग से शूद्र का जन्म होता है।

"जो तू ब्राह्मण–ब्राह्मणी जाया
और राहते काहे न आया।" [13]

दिल्ली के शहंशाह सिकंदर लोदी बिहार में जंग जीतकर वापस लौटते समय कबीर की भेंट लेने के लिए काशी से चले आते हैं। दरबार के सभी लोग बादशाह को सिर झुकाकर सलाम करते हैं मगर सिर्फ खुदा के सामने सिर झुकानेवाले कबीर सिकंदर लोदी को सलाम नही करते। सिकंदर लोदी कबीर को 'भीखमंगे' कहकर खिल्ली उड़ाते है। तभी हाजीरजबाबी कबीर जुलाहों की दुर्गति का बयान करते हुए कहते हैं, "जुलाहों की यही खूबी है बादशाह सलामत, लोगों को कपड़े पहनाते हैं, खुद चिथड़ों में घुमते हैं। जुलाहों को चिथड़े भी नसीब हो जाये, गनिमत है।"[14]

कबीर बादशाह के सामने भी मुसलमानों को फटकारते हैं तथा बताते हैं कि, हर एक का खुदा अलग-अलग न होकर एक ही है। बाहर के पचड़ों में पड़कर हम धरम के मर्म को भूल गए हैं। बादशाह सिकंदर लोदी जब कहता है कि कबीर का रवैय्या

दीन के खिलाफ है। बादशाह दीन की हिफाजत करने के लिए सैकड़ो लोगों को मौत के घाट उतार देता है। इसपर निर्भय कबीर जबाब में कहते हैं कि, हम चाहे जो कुछ भी करें लेकिन मनुष्य की हत्या हत्या ही होती है, दीन की खिदमत नहीं।

'कबीर : दीन की हिफाजत । हत्या करनेवाला हत्यारा
कहलाता है सुलतान ।''[15]

इस प्रकार अपनी निड़र प्रवृत्ति के द्वारा एक सीधा साधा जुलाहा मुल्ला, मौलवी, पण्डे तथा तत्कालीन शासक को भी शह देता है।

2.6 दया व करूणा -

स्वभाव से बेपरवाह, उग्र, अक्खड़ तथा निड़र प्रवृत्ति के कबीर दया व करूणा के उपासक हैं। गरीब तथा दीन–हीन लोगों के प्रति कबीर के मन में आस्था है। वह बेवजह गरीबों, मासुमों पर अत्याचार होते हुए नहीं देख सकते। कबीर के साथ सत्संग में शरीक होनेवाले लोगों की, कबीर को अपनी जान से भी ज्यादा चाहनेवाले लोगों की स्थिति बहुत बुरी है। वे गरीब तथा भिखमंगे हैं। फिर भी कबीर उनके साथ बड़ी आस्था से पेश आते हैं। उनका हालचाल पूछते हैं। उनकी हर प्रकार से मद्द करते हैं। गरीबोंपर होते हुए अत्याचार को देखकर कबीर तिलमिला उठते हैं। समाज के उच्चवर्णीय, अमीर लोग गरिबों को हेय दृष्टि से देखते हैं, उनके साये से भी नफरत करते हैं, उन्हें कबीर अपने सीने से लगाये रखते हैं।

उच्चवर्णीय लोग सिर्फ कबीर को ही नहीं बल्कि कबीर के साथ घुमनेवाले, सत्संग लगानेवाले तथा कबीर के कवित्त गानेवालों को भी समाज के ठेकेदारों का रोष सहना पड़ता है। कबीर के कवित्त गाकर अपनी उपजीविका चलानेवाले नन्दू को कोतवाल के इशारे पर मौत के घाट उतारा जाता है। तब कबीर अस्वस्थ हो उठते हैं।

उसकी अंधी माँ का खयाल आनेपर कबीर उसे अपने घर चलने की बिनती करते है। कबीर के मन को यह शल्य लगा हुआ रहता है कि अपनी . वजह से ही एक अंधी माँ को अपना बेटा खोना पड़ा है।

''कबीर : उसकी माँ कहती थी, बेटा तेरे कवित्त गाता है तो भीड़ इकट्ठी कर लेता हैं, जब से तेरे कवित्त गाने लगा हैं, हमारे घर मे चुल्हा जलने लगा है। अब मेरे कवित्तों के कारण अपना बेटा ही खो बैठी है। रैदासजी।''[16]

बाजार में थान बेचने गए कबीर की भेंट एक भिखारी से हो होती है। उसके जिस्मपर ढंग के कपड़े भी नहीं होते हैं। कपड़ों के नाम पर उसके शरीर पर चिथड़े से है। उस आदमी की औरत बीमार होती है, बच्चे भूख से बिलबिलाते रहते हैं। उसके घर में दो दिन से चूल्हा नहीं जला है। कबीर उसके परिवार की, यह हालत देखकर उसे पूरा का पूरा कपड़े का थान मुफ्त में देते हैं। यह देखकर रैदास कबीर को समझाता है इस तरह थान मुफ्त मे दान करने से तुम क्या खाओगे, बापू को क्या जवाब दोगे? इसपर करूणा के अवतार कबीर कहते हैं, 'रैदास, इस आदमी की हालत देखी तुमने । मैं तो और कपड़ा बुन लुंगा खड्ड़ी पर 'हन घर सूत तनहिं नित ताना'। इसके तनपर कपड़ा न हो यह मैं न देख सका।''[17]

कबीर दुखियारों, गरीब, लाचार लोगों की तकलिफों से लडते रहते हैं। वह गरीब तथा किस्मत के मारे लोगों के दु:ख, दर्द के भागीदार बनते रहें। वह दूसरे पर अत्याचार होते नहीं देख सकते। कबीर औरों के वास्ते खुद मुसीबत में आ जाते हैं। इस बात पर लोई और उनमें हमेशा झगड़ा होता रहता है।

''लोई : मुसीबत मोल होने में तुम्हे मजा आता है। पड़ोस के झमेले में तुम कूदे क्यों?

कबीर : (हँसते हुए) यह अच्छी बात है। लोई, कुंदन और उसका पूरा परिवार मुसीबत में है। वह हमारा पड़ोसी नहीं, दोस्त भी है।

लोई : पड़ोसी है तो क्या उनके लिए मुसीबत लोगे?

कबीर : जिस मुसीबत से आज पडोसी जूझ रहा है वह कल हमें भी झेलनी पड़ सकती है।'' [18]

इस प्रकार कबीर अपने घरवालों की नाराजगी तथा रोष प्राप्त कर दया एवं करूणा के उपासक कबीर समाज के गरीब दुखियारों की मदद करते हैं।

2.7 क्षमाशीलता -

कबीर के व्यक्तित्व को नारीयल की उपमा देना उचित लगना है। जिस प्रकार उपर से कठिण दिखाई देनेवाला ये फल अंदर से बहुतही मीठा तथा कोमल होता है। ठीक उसी प्रकार उपरी स्वभाव से कठोर, अक्खड़, क्रोधी दिखाई देनेवाले कबीर अंतरमन से उतने ही दयालु हैं। गलती करनेवालों को सुधारने का मौका देकर उन्हें सही मार्ग दिखाने का कार्य कबीर करते हैं। क्षमाशीलता उनके स्वभाव का महत्वपूर्ण गुण है। कबीर अपनी नवविवाहिता पत्नी लोई से अत्यंत प्रेम करते हैं। लेकिन लोई का विवाह कबीर के साथ जबरदस्ती किया जाता है। जब कबीर को यह पता चलता है कि लोई किसी साहुकार के छैल छबीले बेटे से प्रेम करती थी, उससे शादी करना चाहती थी। यह बात सुनते ही कबीर का मन आहत हो जाता है। तभी कबीर के घर साधुओं की मंड़ली चली आ जाती है। घर में न आटा होता है और नही फुटी कौड़ी। अपने पति की लाज रखने के लिए लोई साहुकार के लड़के के पास चली जाती है। ताकि उससे कुछ पैसे उधार लेकर वह साधुओं की आवभगत कर सके। मगर साहुकार का बेटा

लोई से वचन लेता है कि लोई उसके पास वापस लौट आए। अपनी जुबान के पक्के कबीर लोई को साहुकार के लडके की शर्त निभाने को कहते हैं। मुसलधार वर्षा होने लगती है। बिजलियॉं कड़कने लगती है। ऐसी तूफानी वर्षा में कबीर लोई को अकेले जाने नहीं देते। वह उसे खुद साहुकार के लड़के के पास पहुँचाने जाते हैं। कबीर के चेहरेपर निर्द्वंद्वता तथा लोई के चेहरे पर अंतर्द्वंद्व झलकता है। भयानक वर्षा, आँधी में कबीर अपना वचन निभाते हैं। लोई के साथ उसके पति कबीर को देखकर साहुकार का बेटा हतप्रभ तथा लज्जित हो जाता है। अपनी गलतियों की क्षमा मॉंगते हुए वह कबीर के चरणों से लिपट जाता है। कबीर उसे गले लगाते हुए कहते हैं,

> "आसमान का आसरा छोड़ प्यारे
> उलटी देख घट अपना जी
> तुम आप में आप तहकीक करो
> तुम छोडो मन की कल्पना जी।"[19]

कबीर कहते हैं आसमान की कल्पना छोड़कर मनुष्य को अपनी औकात पहचाननी चाहिए तथा व्यर्थ की कल्पनाएँ छोड़कर वास्तव जगत में जीना सिखना चाहिए। तात्पर्य यह है कि, ऊपर से अत्यंत कठोर महसूस होने वाले कबीर मे क्षमाशीलता यह महत्वपूर्ण गुण विद्यमान है जिसकी वहज से उनका व्यक्तित्व और भी दमकता नजर आता है।

2.8 समाज सुधारक -

कबीरकालीन समाज अनेक कुप्रथाओं, समस्याओं से ग्रासित था। समाज में अनेक अंधश्रद्धाएँ, ज्ञानहीन आस्थाएँ तथा पारंपारिक रूढ़ियों का प्रचलन था। ऊँच-नीच का बोलबाला था। समाज में उच्चवर्णियों को सरऑंखों पर बिठाया जाता था। निम्नवर्णियों की स्थिती ढोर जानवरों से भी बदतर थी। जातिप्रथा समाज में अपना सर

उठाए खड़ी थी। उसके पैरोंतले निम्न जातिवाले लोग रौंदते जा रहे थे। समाज में स्त्रियों की दशा अत्यंत शोचनीय थी। समाज पतनावस्था की ओर बढ़ने लगा था। इस वक्त समाज को अच्छे द्रष्टे, समाज सुधारक की आवश्यकता थी, जो समाज को पतनावस्था की ओर से ऊन्मुख कर मनुष्य को मनुष्य से जोड़ सके। कबीर के आगमन से समाज को एक द्रष्टे समाज सुधारक की प्राप्ति हुई।

विविध कुप्रथाओं, समस्याओं से जखड़े अंधकार में जीने वाले समाज को कबीर का आना अंधेरे में रोशनी की किरण की तरह था। कबीर के समय की परिस्थिति बहुत ही खौफनाक थी। समाज अनेक समस्याओं से कुलुषित था। हिंदू–मुस्लिमों में आये दिन झगड़े बखेड़े हुआ करते थे, दोनों धर्मों में बाहयाडंबर का बोलबाला था। मन मे कपट भरे हुए साधु लोग दो गज धोती पहनकर, कटोरे भर पेड़े गटककर भगवान की आराधना करने का नाटक करते थे। मुसलमान लोग भी चिल्लाकर अल्ला की आराधना करते थे। उनपर व्यंग्य करते हुए कबीर कहते हैं, ऐसे बाहयांड़बर से ईश्वरप्राप्ति नहीं होती। भगवान की आराधना सच्चे दिल से करनी चाहिए। इस प्रकार हिंदू तथा मुस्लिम दोनों धर्मों के ठेकेदार जो भोलीभाली जनता को बाहयाचारों, पाखंड़ो में फँसाए रखते हैं उनपर 'कबीर खड़ा बजार में' में कबीर द्वारा कडा प्रहार किया गया है। कबीर सहज जीवन जीनेवाले, ईश्वर में आस्था रखनेवाले मानवतावादी व्यक्ति हैं। जाति से जुलाहा होने के कारण उनकी जाति इस्लाम धर्म के तहत आती है मगर इस्लाम धर्म को स्वीकार करने के पश्चात् भी वह मजहबी कट्टरता से काफी दूर हैं। वह मुसलमानों को भी फटकारते हैं। दिनभर रोजा रखकर रात को गाय का मांस भक्षण करनेवालों की कबीर खिल्ली उड़ाते हैं। कबीर काल में हिंदु समाज के अंतर्गत अनेक जातियाँ प्रचलित पायी जाती हैं। कोई शाक्त मत का है, कोई जैनमत का, कोई जंगम, कोई बौद्ध तथा कोई वैष्णव मत का है। यह सभी हिंदू होकर भी मांसाहार करनेवाले मद्यपी तथा दुराचारी हैं। कबीर के युग में ब्राह्मण केवल जन्म के आधारपर ही

सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं चाहे उनका आचरण कितनाही निम्नस्तर का क्यों न हो? निम्नजाति के रैदास की बीवी 'ज्यानकी' को उठाकर ले जानेवाले तथा उसके साथ अत्याचार करनेवाले उच्च जाति के ब्राह्मण ही तो हैं।

ब्राह्मणों के द्वारा उत्पन्न हुई श्रेष्ठ–कनिष्ठता, छुआछुत, अस्पृश्यता को कबीर ने जडसहित उखाड़कर फेंकने का कार्य किया है। कबीर ने न सिर्फ साधुओं के व्रत उपवासों की खिल्ली उड़ाई बल्कि उनके बर्ताव का खंड़न किया है। समाज में स्त्रियों को अत्यंत हीन दर्जा देकर उन्हे भोगवस्तु समझनेवाले लोगों को कबीर खडे बोल सुनाते हैं। मुसलमान शासक अपनी जंग में विजयी होने के बाद राज्य की सारी संपत्ति लुटने के साथ साथ स्त्रियों पर भी अत्याचार करते हैं। सुंदर स्त्रियों को बंदी बनाकर उन्हें हरमों में ड़ाला जाता है। इन सारी बातों के विरूद्ध कबीर ने ड़टकर संघर्ष किया है। कबीर ने सहज मार्ग को मानव धर्म का सबसे सुखद तथा सुलभ मार्ग स्वीकार किया है।

अनेक अंधश्रद्धाओं से भरे पड़े समाज में यह धारणा प्रचलित हो गई कि काशी में मृत्यु हो जाने से मनुष्य को मोक्षप्राप्ति होती है। और मगहर में मृत्यू हो जाने से नरक का भोग मिलता है। इस अंधश्रद्धा के अनुसार बड़ी तादाद में लोग काशी आने लगे। मोक्षप्राप्ति के लिए खुद को मंदिरों के सामने चिरवाने लगे। जीवनभर अंधश्रद्धाओं से लड़ने वाले कबीर यह निश्चय करते हैं कि वह मृत्यु समय मगहर ही जायेंगे; ताकि लोगों को वह इस बेतुके अंधविश्वास से बाहर निकाल सके।

"गायक एक : उनके लिए सहारा बने
गायक दो : कि जुझे प्रकृति के प्रकोप से
गायक एक : पीड़ा को बाँटना और संग सहना है।
गायक दो : चलो छोड़ दो मुर्दों की नगरी काशी
गायक एक : अब हम सबको मगहर जाकर रहना है।"[20]

. उम्रभर अत्याचार, कुप्रथाओं तथा अंधश्रध्दाओं के खिलाफ लडने वाले कबीर ने अपनी मृत्यु के बाद भी अपने उद्देश्य की पूर्ति की। राह भुले हुए समाज को कबीर ने जीवन में सही राह पर चलने की सलाह दी।

2.9 इश्क का मतवाला -

'कबिरा खडा बजार में' में कबीर के इस रूप को साहनी जी ने उभारा है। समाज में होने वाले अन्याय, अत्याचार, ढोंगी, पापी लोगों के विरूद्ध लडनेवाले कबीर इश्क के मतवाले हैं। स्वभाव से अक्खड़, फक्कड कबीर के मन में प्रेम का भाव इस तरह समाहित है जैसे पाषाण में निर्झर। इश्वर भक्ति करते समय उन्होंने संसार को प्रेम मार्ग पर चलने की सलाह दी है। इतना ही नही कबीर प्रेम मार्ग पर चलने की सलाह देनेवाले रामानंद से ही गुरूदीक्षा प्राप्त करते हैं। कबीर पहली बार लुकछिपकर उनके प्रवचन सुनते हैं। जब कबीर उनकी बाते सुनते हैं तो कबीर के अंतर्मन की गांठे खुलने लगती हैं। उनके संशय दूर होते हैं। वह (रामानंद) प्रेम की बाते करते हैं। ऐसा प्रेम जिसमें न व्रत उपवास है, न पूजा—पाठ हैं, न उॅंच—नीच है। उसमें बस सबके लिए प्रेमभाव है और भगवान की भक्ति है।

कबीर अनपढ़ है तो क्या वह उनके गुरू की बात समझ लेते हैं, तथा उनसे 'जीवन का महामंत्र' पा लेते है। मनुष्य सें प्रेम करना ही भगवान की सच्ची आराधना है यह बात कबीर अपने मन मे पक्की कर लेते हैं। प्रेम मार्ग पर चलकर ही भगवान की आराधना करने का निश्चय करनेवाले कवीर के मुखसे निकलता है, "अढ़ाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पण्डित होय।"[21] कबीर दुनिया को प्रेम से जीतने की सलाह देते हैं। वह मनुष्यों के साथ साथ प्राणियोंपर भी प्रेम करते हैं। इसलिए अहिंसा का उपदेश देते हैं। कबीर नाई, चमार, ड़ोम आदि नीची जातवाले लोगों को इकठ्ठा कर सत्संग लगाते है। सत्संग में भजन करते हैं इश्वर विषयक कवित्त सुनाकर गली गली घुमगर लोगों

15507

को प्रेम का संदेश देते हैं।

कबीर प्रियतम के रूप में भगवान को देखते हैं। तथा प्रेमी के रूप में स्वंय को। कबीर की मान्यता है कि जिसके दिल में प्रेम हे उसके दिल में भगवान वास करते हैं। इस तरह वे स्पष्ट करते हैं की, मनुष्य प्रेम का प्यासा है। उसे प्रेम दो, दुखियारों से स्नेह करो, दीन, गरीबों को मदद करो। यही सच्ची इश्वर–भक्ति है। इससे भगवान की प्राप्ति होती है। कबीर अपनी ही धुन में मस्त होकर प्रेम का संदेश देते हैं–

''कबीर : हमन में इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या।
रहें आजादं या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या।
जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दरबदर फिरते
हमारा यार हैं हममें, हमन को इन्तजारी क्या।
न पल बिछड़े पिया हमसे, न हम बिछड़े पियारे से
उन्ही से नेह लगी है, हमन को बेकरारी क्या।
कबीर इश्क का नाता, दुई को दूर कर दिल से
जो चलना राह नाजुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या ।'' [22]

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि , निरक्षर कबीर पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा प्रेम को महत्व देते हैं। सामान्य लोगों के साथ प्रेम से ही पेश आते हैं।

2 10 निरक्षर -

''मसि कागज छूयो नही
कलम गही नहीं हाथ'' [23]

इस उक्ति से ही कबीर के निरक्षर होने का प्रमाण मिलता है। कबीर पुस्तकीय ज्ञान से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी में कभी कागज और कलम

को छुआ तक नहीं। वे पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा स्वअनुभूतिपूर्वक प्राप्त किय हुए ज्ञान को महत्व देते हैं।

कबीर वेद पुराण, कुराण में विशद की गयी बातों को स्वीकार नहीं करते हैं। वेद पुराण के ज्ञान को वह खोखला साबीत करते हैं। समाज में दिखाई देनेवाली समस्याओं का हल करने के लिए कबीर अपनी मनगढ़ंत उक्तियों का सहारा लेते हैं। कबीर के मतानुसार गीतापठन करनेवाले ब्राह्मण और कुराण पठण करनेवाले मुल्लमौलवी यह अज्ञानी हैं। वह पुराण तथा कुराण में बतायी गयी ईश्वर विषयक बातें छोड़कर वे स्वंय कितने श्रेष्ठ हैं तथा दूसरा कैसे कनिष्ठ है इन बातों को सिद्ध करने पर तुले हुए हैं। ब्राह्मण मुसलमानों को हीन ठहराते हैं तथा मुसलमान ब्राह्मणों का हिंदु होने के कारण द्वेष करते हैं। वे खुद को सर्वश्रेष्ठ समझकर गरीब लोगों की नीदा करते हैं। कबीर के मतानुसार हिंदूओं को हिंदू तथा मुसलमानों को मुसलमान तब कहा जाएगा जब उन्हें उपने धर्मग्रंथो का सही अर्थ में ज्ञान हो जाए। वह मानव को मानव की नजर से देखे। कबीर झुठी आस्थाओं तथा परंपराओ के खिलाफ लडते रहे। वह स्वअनुभूतिपर बल देकर समस्याओं का हल करते हैं। कबीर के मन में यह सवाल उठता हैं कि ब्राह्मण, तुर्क और जुलाहा तीनों एक जगह बैठकर भगवान की भक्ति नहीं कर सकते। जब तक किसी की नजर में एक ब्राह्मण और दूसरा शूद्र है, तब तक वह इन्सान को इन्सान नहीं समझेगा। कबीर इन्सान को इन्सान के रूप में देखना चाहते हैं।

इस प्रकार कबीर अनपढ़, निरक्षर होते हुए भी वह वेद पुराण न पढ़ने के बावजूद भी उन धर्मग्रंथों का मर्म पहचान चुके हैं। इसी के बलबुतेपर वह निरक्षर होकर भी समाज को सही दिशा दर्शाने का कार्य करते हैं।

2-11 निर्भय आलोचक -

संत कबीरदास जी का महत्वपूर्ण गुण यह माना जाता है कि वह निर्भय आलोचक हैं। द्रष्टा हैं। समाज में दृष्टिगोचर होनेवाले झूठे कर्मकाड, रूढ़ि, परंपराओं, अधविश्वासों आदि का कबीर कड़ा विरोध करते हैं। ऊँच–नीच, श्रेष्ठ–कनीष्ठ, हिंदु–मुसलमान, अमीर–गरीब यह भेद मान्य नही है। वे सब को एक ही रक्त मांस के बने स्वीकार करते हैं। उनकी नजर में ना कोई श्रेष्ठ है ना कनिष्ठ सभी एकही ईश्वर के बंदे हैं। कबीर का युग तुर्कों का युग है। तत्कालीन शासक सिकंदर लोदी बड़ा ही मग्रुर तानाशाह है। हिंदू जनता शासित है। मुसलमान हिंदूओंपर तथा नीची जाति कें लोगोंपर तरह तरह के अत्याचार करते हैं। खुद को सर्वश्रेष्ठ मानने वाले तथा आपस में भेद करने वाले तुर्कों को कबीर निड़र होकर फटकारते हैं। कहैं कबीर 'सुनो भाई साधो' के कबीर के मतानुसार माँ की कोख में धर्म के संस्कार नही होते। यह मनुष्यों द्वारा बनाये गए नियम हैं। अगर ऐसा होता तो हर कोई मुसलमान अपन माॅ की कोख से ही सुनता करवा के निकलता। वास्तव में सारी मनुष्य जाति एक ही है। यह जातिगत भेद तो मानवनिर्मित है।

"कबीर : तुर्क तू भी सून :
जो तु तुरूक तुरूकिनी जाया
पेटहि काहे न सुनति कराया।"[24]

कबीर अपनी निर्भयवाणी से धर्म के ठेकेदारों के विरूद्ध कड़ा संघर्ष करते हैं। स्वंय को सर्वश्रेष्ठ ईश्वर के बंदे समझने वालों की कटु आलोचना करते हैं। उनकी आलोचना करने की वृत्ति से धर्म के ठेकेदार उनपर रूष्ट हैं। आये दिन कबीर मुल्लामौलवी, पण्डों से झगड़े मोल लेते हैं। परिणाम स्वरूप कबीर की निर्भय आलोचना सहन न करने की वजह से बदले की आग भाग में जलनेवाले कबीर के विरोधी उन्हें हाथ पैर बाॅधकर गंगा नदी में फेंकते है। कबीर को मदमस्त हाथी के पैरों

मे रख दिया जाता है। उन्हे आग में धकेल दिया जाता है। फिर भी कबीर इन सभी यातनाओ मे से सहिसलामत बाहर निकलते हैं। और अपना कार्य और निर्भयता से जारी रखते हैं। कबीर से बदला लेने के लिए उसके साथियों को मार ड़ाला जाता है। मगर इसका उल्टा असर यह होता है कि कबीर से लोग बडी संख्या में जुड़ जाते हैं। कबीर सत्य कहने से कभी नहीं डरते, जो गलत है उसे गलत बताकर समाज को बिगाड़नेवालों की कटु आलोचना करते हैं।

कबीर को अमीरे हाजीब बादशाह सिक्दंर लोदी के सामने पेश करता है। सभी अधिकारीगण बादशाह को अभिवादन करते है। पर कबीर बादशाह को अभिवादन नही करते। इससे क्रोधित हुए काजी–ए–ममालिक चिल्लाकर कंबीर से कहते हैं कि काफिर तू बादशहा को सलाम क्यों नही करता? कबीर सिकंदर लोदी के दरबार में खड़े हैं इस बात को जानकर भी कबीर निर्भयता से उसे जवाब देते हैं–

''कबीर : (शांत भाव से) जो दूसरों का दु:ख–दर्द जान सकते हैं, वे ही पीर होते हैं। बाकी सब काफिर हैं।''[25]

कबीर युग में छुआछुत की समस्या एक प्रकार के सामाजिक कोड़ की तरह फैली हुई थी। शूद्र, दलित वर्ग को मंदिर प्रवेश की अनुमति नहीं थी। कबीर दलित जाति के होने के कारण उन्हें बचपन से ही छुआछुत का सामना करना पड़ा था। लोग उनको हीन समझकर मजाक उडाते थे। उनके साये को भी अपवित्र समझकर उनसे दूर भागते थे। यह भेदभाव कबीर को अखरता था। वह गुस्से से तिलमिला उठते थे और जहाँ भी बुराई दिखाई देती थी वहाँ वह लोगों को फटकारते थे। निर्भय होकर अपने दिल की बात उनके सामने कहते हैं।

''कबीर : निर्भय, निर्गुण गुण गाऊँगा।''[26]

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि, प्रेम के मतवाले अनपढ, क्षमाशील कबीर वक्त आने पर गर्विले तथा अत्याचारी धर्म के ठेकेदारों की कटु आलोचना करने में जरा भी नही हिचकिचाते हैं।

2.12 साधु संगति प्रिय -

तिर्थाटन कर अपने मन में उठनेवालों प्रश्नों का हल पाने के लिए कबीर साधु संगति में रहना पसंद करते थे। साधु संगति में उनके मन को सकुन मिलता था। अपने मन में उत्पन्न होते तरह तरह के सवालें का समाधान उन्हे साधुओं के उत्तरों से होता था। काशी, हज आदि स्थानोंपर तिर्थाटन करने के बजाय वह साधुओं के मेले में जाकर अपनी समस्याओं का समाधान ढूँढने का कार्य करते थे। 'कबिरा खड़ा बजार में' के कबीर साधुसंगाति प्रिय हैं। उनके मतानुसार —

"एक निरंजन अल्लाह मेरा हिंदु तुर्क दुहीं नही मेरा
पूजा करूँ, न नमाज गुजारूँ, एक निराकार हिरदै नमस्कारूँ
न हज जाऊँ, न तीरथ—पूजा, एक पिछाण्या तो क्या दूजा
कहै कबीर भरम सब भागा, एक निरंजन सूँ मन लागा।"[27]

कबीर इश्वर को निर्गुण—निराकार मानते हैं। उसकी प्राप्ति के लिए न तो वह रोजा रखते हैं, न व्रत और न ही तिर्थस्थलों पर जाते हैं। वह अंतर्गन को भक्ति को महत्व देते हैं। उनके मतानुसार जप, तप, योग—याग से इश्वर प्राप्ति नहीं होती। ईश्वर और भक्त के लिए उन्होंने आत्मा और परमात्मा का महत्वपूर्ण उदाहरण दिया है। उनके मतानुसार शरीर मोहमाया का रूप है। शरीररूपी जाल नष्ट हो जाने से आत्मा परमात्मा से मिल जाता है। दरअसल हमारी स्थिति ज्ञान के सागर में रहनेवाली मछली के समान है जो अपने अज्ञान के कारण अपने बन्द-चक्षुओं से ज्ञानप्राप्ती नहीं कर सकती।

"पानी बिच मीन पियासी, मोही सुन सुन आवे हांसी।"[28]

कबीर सत्संग प्रेमी हैं। सत्संग लगाना उनमें साधुओ कों निमंत्रित करना उनका नित्यकार्य है। कबीर के मतानुसार साधुओं की सेवा और संपर्क से मनुष्य के स्वभाव में पाये जानेवाले दोष दूर होकर वह पावन हो जाता है। उसे ज्ञानमार्ग की प्राप्ति हो जाती है। कबीर साधु संतों को असाधारण महत्व देते हुए कहते हैं, साधुओं की सेवा ईश्वर सेवा होती है। उनका स्वभाव दृढ होता है। कुसंगति उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। वह मोहमाया के बंधन से मुक्त होते हैं। मोहमाया उनका कुछ नही बिगाड़ सकती। साधु संगाति कबीर को इसलिए प्रिय लगती है कि साधुओं की कथनी और करनी में अंतर नही होता। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि धर्म के व्यर्थ पचड़ो तथा बाह्याडंबरों में फँसने के बजाए कबीर साधुओं के सहवास से समस्याओं का हल ढूंढ़ने की कोशिश करते हुए पाये जाते हैं।

2.13 सरल व्यक्तित्व -

अब तक 'कबिरा खड़ा बजार में' तथा 'इकतारे की आँख' इन नाटकों में कबीर का आक्रमक, विद्रोही रूप प्रकट होता है। समस्त परंपरावादी व्यक्तित्व से परे एकदम निश्चल अहिंसावादी रूप 'कहै कबीर सुनो भाई साधो' में चित्रित किया है। नीरू और नीमा की डाँट फटकार भी वह बिना किसी क्षोभ और प्रतिरोध के सहन कर जाते हैं। वह उनपर जरा भी गुस्सा नही करते। उनके साथ प्रेम से ही पेश आते हैं। कबीर के भोले भाले व्यक्तित्व से तंग आकर नूरा हरवक्त उन्हे कोसते रहते हैं। कबीर बाजार में जाकर थान बेचने के बजाय वे दुखियारों को कपड़े का थान ऐसे ही बाँट देते हैं। कबीर के ऐसे स्वभाव से उनके घर की आर्थिक हालात कुछ अच्छे नहीं होते। कबीर के स्वभाव से तंग आये हुए नूरा कबीर को हरवक्त कोसते हैं।

"नूरा : घर में खाने को अन्न दाना नहीं, इधर लड़का आवारा हो गया । हमारी जान लेकर रहेगा।"[29]

आगे वे कहते हैं,

"नूरा : न जाने किसको उठा लायी। तब तो बडी मोहगर बनी थी, अब किये की भुगतो। यह तो साँप पालते रहे। न दीन के रहे न जहान के।"[30]

इतना सब होने के बावजूद भी कबीर उन्हें सर पे उठाये रखते हैं। अपनी वजह से घरवाले परेशान न हो इसलिए वह घर छोडकर भी चले जाना चाहते है। कबीर हर ऐरे गैरे से उलझते फिरते है, वह घर से कपड़ा बेचने जाते हैं तो घण्टो अपने साथियों के साथ बैठकबाजी करते फिरते हैं। जहाँ देखो वहाँ कबीर अपना दरबार लगाके बैठे हुए रहते हैं। वह कभी भाँग धतूरा नही पिते कभी जुआ नहीं खेलते। पर वह अपने भोले स्वभाव की वजह से लोंगों से उलझते फिरते हैं। इससे चिढ़कर लोग उसके पीछे लठ लेकर घुमा करते हैं। इस बात से परेशान नूरा कबीर को अनाप शनाप बोलते रहते हैं उनके मतानुसार लोगों से उलझते फिरने से घरों के घर तबाह हो जाते हैं, सिर फुटौवल अलग होती है।

बाजार मे 'सास्तरार्थ' करने में मग्न कबीर अपना कपड़े का थान जुलाह पट्टी के किसी आदमी को दे देते हैं। नूरा के पूछने पर कि तीनों थान बिक गए। तब कबीर बडी ही सरलता से कहते हैं,

"कबीर : ले आयेगा बापू, चिन्ता की कोई बात नहीं। सर्राफो के बाजार के चौक में, बनवारी की दूकान के पास खड़ा था।"[31]

कबीर के सीधे तथा प्रश्नाकुल स्वभाव से आये दिन पंडित मौलवियों द्वारा कबीर की पिटाई होती है। कभी कभी कबीर की वजह से नूरा को भी मार पड़ती है। इसलिए नूरा हमेशा उन्हे 'पराया', 'साँप' कहकर अपना गुस्सा कबीरपर उतारते हैं। इसका असर यह होता है कि कबीर को पता चल जाता है कि वह किसी पराये की

औलाद है। अपनी माँ नीमा से सच बात जान लेने पर बडे ही सहज भाव से कबीर स्वीकार कर लेते हैं कि वह किसी की नाजायज औलाद हैं।

"कबीर : तब तो मैं बड़ी उंची जात का हूँ, माँ।
ब्राह्मणी का हरामी बेटा।"[32]

इस प्रकार कबीर अपने सरल स्वभाव की वजह से लोगों से उलझते है और क्रोधवश लोग उनपर कोड़े बरसाते हैं। लेकिन कबीर उनपर कभी हाथ नहीं उठाते । अपनी माँ नीमा और पिता नूरा की ड़ॉट फटकार को भी वह सहज ही लेते हैं। वे उनसे कभी नाराज नही होते, वे इतने सरल स्वभाव के है कि लोगों का दु:ख दर्द देखकर वे पसीज उठते हैं।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि , पाखण्डियों की तथा समाज कंटकों की निर्भय मन से आलोचना करने वाले कबीर गरीब, दुखियारों के साथ सरलता से पेश आते हैं।

2.14 पथप्रदर्शक -

कबीर कालीन समाज में हर जगह अन्याय, अत्याचार, पाखण्ड़ का बोलबाल था। समाज में विविध प्रकार की समस्याएँ व्याप्त थीं। आये दिन हिंदू मुसलमानों में संघर्ष होता रहता था। इन सारी बातो से समाज त्रस्त था। समाज में दीन, शूद्र लोगों की अवस्था अत्यंत शोचनीय थी। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए लोग एकदूसरे की जान पर उतर आते थे। ऐसे राह भटके लोगों को सही मार्ग पर लाने का कार्य कबीर ने किया। समस्याओं के किचड़ से निकालकर लोगों को सही दिशा देने का कार्य कबीर ने किया। विवेच्य नाटकों में नाटककारों ने कबीर के पथप्रदर्शक रूप को चित्रित किया है:-

स्वभाव से जागरूक होने के कारण कबीर अंधो की तरह झूठे कर्मकांड़ो को स्वीकार नहीं करते। कबीर के मतानुसार भगवान की प्राप्ति के लिए ज्ञानमार्ग ही काफी नहीं हैं। वह एक ऐसा मार्ग चाहते हैं जिसपर सभी चल सके। क्योंकि वेदपठन करने का अधिकार सिर्फ ब्राह्मणों को है। नीच जात का आदमी वेदपठन नहीं कर सकता तथा वह उसे हाथ भी नहीं लगा सकता इसलिए कबीर का मानना है कि कोई ऐसा मार्ग हो जो सबके लिए हो, जिस पर ग्रहस्थ भी चल सके, साधु भी चल सके हिंदू भी तथा तुर्क भी।

कबीर का प्रखर मत है कि भक्ति ही इश्वर तक पहूँचने का सच्चा मार्ग है। ईश्वर तथा मोक्षप्राप्ति के लिए घरबार छोड़कर वन में चल जाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि सांसारिक सुखों का उपभोग लेकर भी मोक्षप्राप्ति की जा सकती है इसपर कबीर को अधिक विश्वास है। कबीर समाज के लोगो का पथप्रदर्शन करते हुए कहते हैं अपने ही शरीर में हमे भगवान के दर्शन हो सकते हैं। हमारे शरीर में ही सात समंदर विद्यमान हैं तथा उसीमें अनगिनत पारख मोती पाये जाते हैं उन्हे इतरत्र ढूँढने की आवश्यकता नहीं हैं। अर्थहीन जिंदगी जीनेवाले लोगों को जीवन का महामंत्र पढ़ानेवाले कबीर के मतानुसार,

"इस घट अन्तर बाग बगीचे, इसी में सिरजनहारा,
इस घट अन्तर सात समन्दर, इसी में नौ लखतारा,
इस घट अंतर पारस मोती इसी में परखनहारा,
इस घट अंतर अनहद गरजे, इसी में उठत फुहारा,
कहत कबीर सुनो भाई साधो इसी में साई हमारा।"[33]

इस प्रकार कबीर ने समाज में फैले हुए दूराचार, जातिभेदों को मिटाकर मानव को एक ही धर्म से जोड़ने का प्रयत्न किया वह है मानवता धर्म। अपनी विचारधारा को

अपनानेवाले भक्तों तथा शिष्यों को संगठित करके उन्हें पाखण्ड, दूराचारों झूठे कर्मकांड़ो का विरोध कर भक्ति की राह पर चलने का निर्देश किया है। नाही किसी से दोस्ती और ना ही किसीसे बैर रखनेवाले कबीर सबके साथ समान ही व्यवहार करते हैं तथा अंधश्रद्धा, कुरीतियाँ, अनिष्ट परपराओं से भरे समाज को कबीर बाजार की उपाधि देते हैं तथा इन कुप्रथाओ के विरूद्ध संघर्ष करने की सलाह देते हैं –

''कबिरा खड़ा बाजार में
सबकी माँगे खेर
ना काहू से दोस्ती
ना काहू से बैर''[34]

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि कबीर का व्यक्तित्व मध्ययुग का एक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व रहा है। मध्ययुग अनेक समस्याओं से ग्रासित पाया जाता है। जिसमें सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक समस्याओं का प्रमुखता से समावेश हैं। इन सारी समस्याओं का कबीर अपनी कठोर वाणी द्वारा विरोध करते हुए पाये जाते हैं।

ईश्वर की साधना तथा भक्ति में अपना जीवन यापन करनेवाले बेपरवाह कबीर, खुद के परिवार की चिंताओं को दूर हटाकर संसार को चिंताओं से मुक्त कराने के लिए प्रयत्नशील पाये जाते हैं। अपने दृढ़ तथा उग्र स्वभाव के कारण अपने ध्येय से जरा भी विचलित न होनेवाले कबीर निरक्षर होकर भी स्वंय को परमज्ञानी समझनेवाले मुल्ला पंडितों का निड़रता से प्रतिकार करते हैं। इनकी फटकार से धर्म के ठेकेदारों के साथ साथ तत्कालीन शासक भी नही बच पाते। बाहरी व्यक्तित्व से कठोर, पाषाणहृदयी दिखाई देनेवाले कबीर विनम्र तथा क्षमाशिल भी हैं। जीवन में गलती करनेवालों को उदार अंतकरण से गलती सुधारणे का मौका देने का सत्कार्य कबीर करते हैं। इश्क

को सर आँखो पर रखनेवाले अनपढ़ कबीर प्रसंग आनेपर आलोचना करने में बिल्कुल पीछे नहीं हटते। ऐसे पथप्रदर्शक कबीर के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के दर्शन इस अध्याय में होते हैं।

❖ संदर्भ सूची ❖

			पृष्ठ
1.	हिंदी साहित्य . युग और प्रवृत्तियाँ	: डॉ.शिवकुमार शर्मा	135
2.	कबीर	: डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी	
3.	कबिरा खड़ा बजार में	: भीष्म साहनी	76
4	— वही —		19,20
5.	कहै कबीर सुनो भाई साधो	: नरेंद्र मोहन	48,49
6.	— वही —		49,50
7.	— वही —		57
8.	कबिरा खड़ा बजार में	: भीष्म साहनी	50
9	कहै कबीर सुनो भाई साधो	: नरेंद्र मोहन	64
10.	— वही —		25
11.	— वही —		27
12			
13.	कहै कबीर सुनो भाई साधो	: नरेंद्र मोहन	66
14	कबिरा खड़ा बजार में	· भीष्म साहनी	106
15	कहै कबीर सुनो भाई साधो	: नरेंद्र मोहन	77
16.	कबिरा खड़ा बजार में	: भीष्म साहनी	50
17	कहै कबीर सुनो भाई साधो	: नरेंद्र मोहन	24
18	— वही —		55
19.	— वही —		47
20	इकतारे की आँख	: मणि मधुकर	83
21	कबिरा खड़ा बजार में	: भीष्म साहनी	49
22	— वहो —		93
23	— वही —		87
24.	कहै कबीर सुनो भाई साधो	: नरेंद्र मोहन	66
25.	— वही —		75
26.	कबिरा खड़ा बजार में	: भीष्म साहनी	109
27.	— वही —		110
28	कहै कबीर सुनो भाई साधो	: नरेंद्र मोहन	45
29	कबिरा खडा बजार मे	: भीष्म साहनी	17
30.	— वही —		17
31.	— वही —		20
32	— वही —		24
33	— वही —		108
34:	इकतारे की आँख	: मणि मधुकर	45